

## कुमारियों को भट्टी में प्राण अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

आज बापदादा सब बच्चों से कहाँ मिलन मना रहे हैं? किस स्थान पर बैठे हो? सागर और नदियों के मिलन स्थान पर मिलन मना रहे हैं। सागर का कण्ठा पसन्द आता है ना। सिर्फ सागर नहीं लेकिन अनेक नदियों का सागर के साथ मिलन स्थान कितना श्रेष्ठ होगा। सागर को भी नदियों का मिलन कितना प्यारा लगता है। ऐसा मिलन मेला फिर किसी युग में होगा? इस युग का मिलना सारा कल्प भिन्न-भिन्न रूप और रीति से गाया मनाया जायेगा। ऐसा मेला मनाने के लिए आये हो ना, यहाँ वहाँ से इसलिए भागे हो ना। सागर में समाए, समान मास्टर ज्ञान सागर बन जाते हो अर्थात् बाप सामान बेहद के स्वरूप में स्थित हो जाते हो। ऐसा बेहद का अनुभव करते हो? बेहद की वृत्ति अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की वृत्ति – मास्टर विश्व कल्याणकारी। सिर्फ अपने वा अपने हृद के निमित्त बनी हुई आत्माओं के कल्याण अर्थ नहीं, लेकिन सर्व के कल्याण की वृत्ति हो। मैं तो ब्रह्माकुमारी बन गई, पवित्र आत्म बन गई – अपनी उन्नति में, अपनी प्राप्ति में, अपने प्रति सन्तुष्टता में राजी होकर चल रहे हैं, यह बाप सामन बेहद की वृत्ति रखने की स्थिति नहीं है। हृद की वृत्ति अर्थात् सिर्फ स्वयं प्रति सन्तुष्टता की वृत्ति। क्या यहाँ तक ही सिर्फ रहना है वा आगे बढ़ना है? कई बच्चे बेहद की सेवा का समय, बेहद की प्राप्ति का समय, बापसमान बनने का गोल्डन चान्स वा गोल्डन मैडल लेने के बजाए, मैं ठीक चल रही हूँ, कोई गलती नहीं करती, लौकिक, अलौकिक जीवन दोनों अच्छा निभा रही हूँ, कोई खिट-खिट नहीं, कोई संगठन के संस्कारों का टक्कर नहीं, इसी सिलवर मैडल में ही खुश हो जाते हैं। बाप सामान बेहद की वृत्ति तो नहीं रही ना। बाप विश्व कल्याणकारी और बच्चे – स्व कल्याणकारी, ऐसी जोड़ी अच्छी लगेगी? सुनने में अच्छी नहीं लग रही है। और अब बनकर चलते हो तब अच्छी लगती है? सर्व खजानों के मालिक के बालक खजानों का महादानी नहीं बने तो उसको क्या कहा जायेगा? किसी से भी पूछो तो बाप के सर्व खजानों के वर्से के अधिकारी हो? तो सब हाँ कहेंगे ना। खजाना किसलिए मिला है? सिर्फ स्वयं खाओ पियो और अपनी मौज में रहो, इसलिए मिला है? बाँटो और बढ़ाओ यही डायरेक्शन मिले हैं ना। तो कैसे बाँटेंगे? गीता पाठशाला खोल ली वा जब चांस मिला तब बाँट लिया इसमें ही सन्तुष्ट हो? बेहद के बाप से बेहद की प्राप्ति और बेहद की सेवा के उमंग उत्साह में रहना है। कुमारी जीवन संगमयुग में सर्व श्रेष्ठ वरदानी जीवन है। तो ऐसी वरदानी जीवन ड्रामा अनुसार आप विशेष आत्माओं को स्वतः प्राप्त है। ऐसी वरदानी जीवन सर्व को वरदान, महादान देने में लगा रहे हो? स्वतः प्राप्त हुए वरदान की लकीर श्रेष्ठ कर्म की कलम द्वारा जितनी बड़ी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो। यह भी इस समय को वरदान है। समय भी वरदानी, कुमारी जीवन भी वरदानी, बाप भी वरदाता। कार्य भी वरदान देने का है। तो इसका पूरा पूरा लाभ लिया है? २१ जन्मों तक लम्बी लकीर खींचने का चांस, २१ पीढ़ी सदा सम्पन्न बनने का चान्स जो मिला है वह ले लिया? कुमारी जीवन में जितना चाहो कर सकते हो। स्वतंत्र आत्मा का भाग्य प्राप्त है। अपने से पूछो – स्वतन्त्र हो या परतंत्र हो? परतंत्रता के बन्धन अपने ही मन के व्यर्थ कमजोर संकल्पों की जाल है। उसी रची हुई जाल में स्वयं को परतंत्र तो नहीं बना रहो हो? क्वेश्चन की जाल है। जो जाल रचते हो उसका चित्र निकालो तो क्वेश्चन का ही रूप होगा। क्वेश्चन क्या उठते हैं, अनुभवी हो ना। क्या होगा, कैसे

होगा, ऐसे तो नहीं होगा, यह है जाल। पहले भी सुनाया था – संगमयुगी ब्राहमणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि – “जो होगा वह कल्याणकारी होगा। जो होगा रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा।” यह संकल्प है जाल को समाप्त करने का। जबकि बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बड़ा दिन है, बुरा दिन नहीं। हर दिन आपका उत्सव है ना। हर दिन मनाने का है। इस समर्थ संकल्प से व्यर्थ संकल्पों की जाल को समाप्त करो।

कुमारियाँ तो बापदादा की, ब्राहमण कुल की शान हैं। फर्स्ट चान्स कुमारियाँ को मिलता है। पाण्डव हँसते हैं कि छोटी छोटी कुमारियाँ टीचर बन जातीं, दादी बन जातीं, दीदी बन जातीं। तो इतना चान्स मिलता है। फिर भी चान्स न लें तो क्या कहेंगे। क्या बोलती हो, पता है? सहयोगी रहेंगे लेकिन समर्पण नहीं होंगे। जो समर्पण नहीं होंगे वह समान कैसे बनेंगे बाप ने क्या किया? सब कुछ समर्पित किया ना। वा सिर्फ सहयोगी बना? ब्रह्मा बाप ने क्या किया? समर्पण किया वा सिर्फ सहयोगी रहा। जगत अम्बा ने क्या किया? वह भी कन्या ही रही ना। तो फालो फादर मदर करना है वा एक दो में सिस्टर्स फालो करते हो। “इसका जीवन जीवन देखकर मुझे भी यही अच्छा लगता है।” तो फालो सिस्टर्स हो यगा ना अब क्या करेंगी? डर सिर्फ अपनी कमजोरी से होता है। और किसी से नहीं होता। अब क्या लेंगी? गोल्डन मैडल लेंगी वा सिलवर ही ठीक है। कमजोरियों को नहीं देखो। वह देखेंगी तो डरेंगी। न स्वयं कमजोर बनो न दूसरों की कमजोरियों को देखो समझा क्या करना है!

बापदादा को तो कुमारियाँ देख करके खुशी होती है। लोगों के पास कुमारी आती है तो दुख होता है। और बापदादा के पास जितनी कुमारियाँ आवें उतना ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि हर कुमारी विश्वकल्याणकारी, महादानी, वरदानी है। तो समझा कुमारी जीवन का महत्व कितना है। आज विशेष कुमारियों का दिन है ना। भारत में अष्टमी पर कुमारियों को खास बुलाते हैं। तो बापदादा भी अष्टमी मना रहे हैं। हर कन्या अष्ट शक्ति स्वरूप है। अच्छा –

ऐसे सर्व श्रेष्ठ वरदानी जीवन अधिकारी, गोल्डन चांस अधिकारी, २१ पीढ़ी की श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींचने के अधिकारी, स्वतंत्र आत्मा के वरदान अधिकारी, ऐसे शिव वंशी ब्रह्माकुमारियों, श्रेष्ठ कुमारियों को विशेष रूप में और साथ-साथ सर्व मिलन मनाने वाले पद्मापदम भाग्यवान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय – कर्मभोग पर विजय पाने वाले विजयी रत्न हो ना। वे कर्मभोग भोगने वाले होते और आप कर्मयोगी हो। भोगने वाले नहीं हो लेकिन सदा के लिए भस्म करने वाले हो। ऐसा भस्म करते हो जो २१ जन्म कर्मभोग का नाम निशान न रहे। आयेगा तब तो भस्म करेंगे? आयेगा जरूर लेकिन आता है भस्म होने के लिए न कि भुगाने के लिए। विदाई लेने के लिए आता है। क्योंकि कर्मभोग को भी पता है कि हम अभी ही आ सकते हैं फिर नहीं आ सकते। इसलिए थोड़ा थोड़ा बीच में चाँस लेता है। जब देखते यहाँ तो दाल गलने वाली नहीं है तो वापस चला जाता।

दादी दीदी को देखते हुए – इतने हैण्डस देखकर खुशी हो रही है ना? जो स्वप्न देख रही थी वा साकार हो गया ना। इतने हैण्डस हों, इतने सेन्टर बटें यह स्वप्न देख रही थी ना। क्योंकि हैण्डस की दादी दीदी को सबसे ज्यादा आश रहती है। तो इनते सब बने बनाये हैण्डस देखकर खुशी होगी ना। भारत की कुमारियों में और विदेश की कुमारियों में भी अन्तर है, इन्हें कमाई की क्या आवश्यकता है। (डिग्री लेनी है) जब तक सेवा में प्रैक्टिस नहीं की है तब तक डिग्री की भी वैल्यु नहीं है। डिग्री की वैल्यु सेवा से है। पढ़ाई पढ़कर कार्य में नहीं लगाया, पढ़ाई के बाद भी गृहस्थी में रहे तो लौकिक में भी कहते हैं, पढ़ाई से क्या लाभ। अनपढ़ भी बच्चे सम्भालते और यह भी सम्भालते तो फर्क क्या हुआ। ऐसे ही यह भी पढ़कर अगर स्टेज पर आ जाए जो डिग्री की वैल्यु भी है। अगर यहाँ चाँस मिलता है तो डिग्री आप ही मिल जायेगी। यह डिग्री कम है क्या। जगदम्बा सरस्वती को कितनी बड़ी डिग्री मिली। यहाँ की डिग्री तो वर्णन भी नहीं कर सकते।